Scanned by CamScanner

आचार्य स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज

लक्ष्मणकिलाधीश

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

जन्मोत्सव बधाई पदावली

आचार्य पीठ श्री लक्ष्मण किला

श्री अयोध्या जी, फैजाबाद

- जन्मोत्सव बधाई पदावली
श्रीराम नवमी वर्ष, 2010

- प्रति – 2000

- प्राप्ति स्थल :
कार्यालय श्री लक्ष्मणकिला
श्री अयोध्या, फैजाबाद
मो. : 9415062831

- प्रकाशक :
स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान
श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्ण बलराम हॉल,
आशियाना मेन रोड, पटना – 800025
दूरभाष : 0612–3584648

- मूल्य : 30/– (तीस रुपये)

- मुद्रक : दीपक प्रेस, तारागंज पुल,
लश्कर,ग्वालियर फोन : 0751–2438668

।। श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः ।।

भूमिका

श्री सीतारामचरणानुरागी श्रीवैष्णवों के लिए नाम–रूप–लीला और धाम का अहर्निश सेवन ही परमधर्म है। इष्ट के चरित्र का अनुस्मरण, उत्सव–समैया के माध्यम से प्रभु लीलाओं में प्रवेश की साधना आचार्यों की परम्परा रही है। इसी क्रम में उपासना निरत पूर्वाचार्यों ने प्रभु श्री राघवेन्द्र की जन्मलीला का दर्शन किया है और तत्सम्बन्धी विशिष्ट साहित्य की रचना की है। पूज्यपाद गोस्वामी जी महाराज, श्रीकृपानिवास जी, स्वामी श्री करुणा सिन्धु जी महाराज, श्री युगलप्रिया जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री यगुलान्यशरण जी महाराज, पं. श्री जानकीवरशरण जी महाराज तथा श्री सियाअलीजी प्रभृति अनेक भावुक संत इस रीति से उपासना करते रहे हैं। पूज्य आचार्यों की यह महावाणी वैष्णव सम्प्रदाय की महत्तर सम्पत्ति है। साधक इन पदों का गान करते हुए भाव–समाधि द्वारा अपने देश–काल को विस्मृत कर प्रभु–सन्निधि के आस्वाद में डूबे रहते हैं। जन्मोत्सव बधाई के पदों का गान करते हुए मन्दिरों में जन्म महोत्सव सम्पन्न होता है। श्रीराम जी, श्री किशोरी, श्री हनुमान जी व अन्य पूवाचार्यों की बधाई युक्त यह पदावली पूर्वकाल से ही प्रकाशित होती आ रही है। इसी का यह नया संस्करण है। अनुरागीजन इससे पदों का गान करते हुए प्रभु जन्मोत्सव के उस आनन्द–सरोवर में निमज्जन कर सकेंगे जिसकी फलश्रुति बताते हुए श्री गोस्वामीपाद ने कहा है –

भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सहित अन्हवैया।
'तुलसी' तब के से अजहुँ ज़ानिबे रघुबर नगर बसैया ।।

इस संस्करण के प्रकाशन में जिनका श्रम–सहयोग सन्निहित है। उन सभी के लिए मंगलकामन ।

श्री रामनवमी 2010 **– मैथिलीरमण शरण**

मध्य दिवसगत भानु, विमानन सुर बरी।
नाचहिं गावहिं सुमुखि, मगन गति मति हरी।।

छं. –गति हरी हिय हरषि निरखहिं नगर रचना छवि सनी।
कहि सकहिं नहिं सुख सुयश सुखमा उमा रति वाणी गनी।।

तिथि नवमी मधुमास, पुनर्वसु सुख भरी।
योग लगन ग्रह बार, सुविधि दाहिनि करी।।

छं. – सुन्दरी कौशल्या रामजननी प्रगटि सुवन सु श्याम हैं।
कैकयी सुमित्रा सुवन चारौं चतुर सुखमा धाम हैं।।

नित नव मंगलचार, गाय, किन्नर नरी।
ज्ञानाअलि बड़ भाग, सुयश बाँटे परी।।

छं. –जग विदित तिहुँपुर चारि युग श्री जन्मभूमि सुहावनी।
सुख अवधि वर कारनि रमापुर भाविकन मन भावनी।।

झूलत मातु उछंग, कबहुँ वर पालने।
कबहुँ पिता की गोद, फँसे सुख जालने।।

छं. – गहि पद अंगुष्ठ मयंक नखद्युति कंज मुख पीवत छके।
सुरतरु सुभग नृपरानि शिशु फल पाय जनु सुन्दर पके।।

नित नव बाल बिनोद, मोद भरि राजहीं।
मातु कौशिल्या आदि, मनहिं मन गाजहीं।।

छं. –भरि भाग अचल सोहाग मातु नृपाल लालहिं पालहीं।
पय प्रेम प्याय लगाय उर प्रमुदित सुवन नित लालहीं।।

ज्ञानाअलि पुरनारि, सु सोहिलो गावहीं।
तन मन धन निवछावरि, करि सुख पावहीं।।

पद – 26

बाजे बाजे बधाई आछियाँ।

कौशलेश जू के पुत्र भये सुनि नभ बिच सुरतिय नाचियाँ।
घर–घर मंगल साज अवधपुर ध्वजा पताका साचियाँ।।
जहँ–तहँ गान करत पुरवासिनि गलियाँ अरगजे माचियाँ।
विप्र वेद उच्चार चहूँ दिशि याचक आशिरवाचियाँ।।
नभ ते सुमन वृष्टि बहु रंजन पुर गलि चौहट गालियाँ।
'रसिकअली' महामोद सबन के असुरन के उर आँचियाँ।।

पद – 27

बाजे–बाजे री बधाई आजु बाजै।

सकल भुवनपति राम सुवन भये चक्रवर्ती महराजै।।
रचना विविध अवध घर–घर प्रति मंगलप्रद रितुराजै।
छिति नभ मोद प्रमोद विनोदहिं सुखमय साज समाजै।।
सुरनर मुनि सचराचर हर्षित जय–जय होत अवाजै।
अंगहि अंग उमंग रँग रँगे नैन ऐन छवि छाजै।।
श्री सतगुरु महराज प्रणत हित सफल कियौ मन काजै।
'युगलविहार' बहार लखन नित धाम नाम प्रभु ब्याजै।।

पद – 28

विविध विनोद प्रमोद सु बासर, मगन अवध नर नारी।
कौशिल्या नभ हृदय प्रगट ससि, राम प्रमोद निहारी।। 1।।

आनन्द अंबुधि हरषि बीचि मानो, उमगि चली सरिता री।
मुनिजन वृन्द चकोर मुदित मन, निरखि बदन श्रमहारी ।। 2 ।।

मंगल सुधा श्रवै दस आसनि, ताप शोक भय टारी।
पंकज दनुज चक्कि चकवा दे, मुरुझि लजे तावारी ।। 3 ।।

यूथ-यूथ बनिता बनि सुन्दरि, लिये मंगल कर थारी।
मानो बिपुल भारती गावति, राम जनम सुखकारी ।। 4 ।।

निसरि प्रवेश द्वार भूपति के, भीर कुतूहल भारी।
जनु सजि चन्द रूप मन्दिर में, आवत जात अपारी ।। 5 ।।

मणिमय चौक साथियाँ पूरति, नागरि नव सुकुमारी।
मनो दशरथ नृप भाग प्रशंसा लिखत अमित विधि प्यारी ।। 6 ।।

गृह-गृह बन्दनवार बँधावति, मालिन छबि मतवारी।
मनो सचिपति निज चाँप करनि ते, धरत, सुधारि-सुधारी ।। 7 ।।

ध्वजा पताका तोरनि कोरनि, नागरि नरन बनाई।
मनो सिंगार बाग कुंजनि के, कदली मूँग सोहाई ।। 8 ।।

कलश भवन पर दीप मनो नभ, कोटिन दिनमणि छाई।
विपुल वितान तने मणिगन युत, मन्-विधु उरग बसाई ।। 9 ।।

पट चामर छाये चौहट बट, रटत न उपमा आई।
केशरि मलय अरगजा सौंधे, वीथिन कीच मचाई ।।10 ।।

धूप धूम नभ पावस मानो, गरज़ि निशान बजाई।
दादुर मोर विप्र बंदीजन, बरषा सुख बिपुलाई ।। 11 ।।

बिबुध-बधू नाचैं चपला घन, सुमन माल बगपाँती।
बहुरँग बंदनवार महल पर, जनु मघवा धनु काँती।। 12।।

नटवा भाट सूत मागध जन, दूब बँधाइ असीसैं।
मानो पुण्य देव चूड़ामणि, पूजत अमर बरीसैं।। 13।।

हय गय स्यन्दन धेनु महिषि महि, भूषण बसन लुटावैं।।
दशरथ कोटि धनद की माया, लखि वरदान लजावैं।। 14।।

शीश नमत चतुरानन आये, भव नारद गुण वरनैं।
मनहुँ भाग मणि चारि पदारथ, अनइच्छित सुख सरनैं।। 15।।

रानी सब निज मन्दिर सुन्दर, फली परमआनन्दम्।
मनहुँ हरषि उपवन छवि वेली, सुधा पोषि मकरन्दम्।। 16।।

पुत्र उछंग सुमाय विराजैं को उपमा सब कहिये।
जनु दसधा धरि सर्वसु मूरति, ज्ञान योग ललचइये।। 17।।

ललना गण ललकार सुहेलरा, गावत प्रेम छई है।
आरज लाज विगत पट भूषण, तन मन बिसरि गई है।। 18।।

कमला सची गिरा भव पत्नी, रती आदि सुर वामा।
गाय प्रसंसि हंस कुल रानी, दासीवत कृत कामा।। 19।।

कर कमलनि वर थार सौज भरि, करति आरती हरषी।
वारति राई लोन सुतनि पर, गुरतिय बड़री घर की।। 20।।

धनमणि बोल सुप्राण अलंकृत, निवछावरि सब करहीं।
परमानन्द बिबस पुर परिजन, परम मनोरथ भरहीं।। 21।।

गुरु भूसुर मिलि राय भाव बस, आय सुललन निहारी।
मुदित सकल जनु पाय अमल फल, तापस श्रम भ्रम हारी।। 22।।

जातकर्म श्रुति रीति बिबिध विधि, नन्दीमुख व्यवहारा।
करि प्रमोद दक्षिणा दयो बहु, हाटक मणिगण भारा।। 23।।

राज उमंग उछंग धरे सुत, सो उप चुप कवि वाणी।
मिस परब्रह्म सुधर्म गोद में, मूरति परमति सानी।। 24।।

यह सुख सुभग सुरस सुचि दुर्लभ, पंक्तीरथ सु निकेता।
सुर दुहितादिक बाँछत दुर्गम, बावन विधि लहि वेता।। 25।।

रघुकुल कंज पुंज मंजुल रबि, प्रगटे अज सुखदाई।
'कृपानिवास' बलैया छबि, की, पाय अघाय बधाई।। 26।।

पद – 29

मेरे रघुबर परम दयाल, लिहारो ढाढ़ी आयो।
नृप दशरथ जग वेद उजागर, जस बितान जग छायो।। 1।।

इक्ष्वाकु नाम राजा अति सुन्दर, परम पुनीत प्रधान।
जिन यह नगरी निर्मित कीन्हों को करि सकै बखान।। 2।।

तामधि नृपति उदार भये बहु, धृत मरजाद प्रमान।
सगर दिलीप भगीरथ कहिये, रघु अज परम सुजान।। 3।।

रबिकुल आदि अन्त को बरनै, गुण प्रकाश को जानै।
अतिहिं पुनीत धर्म धुजि भये सब, दान मान सनमानै।। 4।।

मैं तो तिहारी घर की ढाढ़ी, सब जग में सरनाम।
तुमहीं जाँचि और नहिं जाँचौं, सब विधि पूरन काम।। 5 ।।

गज रथ बाजि बाहिनी वाहन, अठसिधि नव निधि धाम।
तुम्हरी कृपा अजाँची कीन्हों, गुन गाऊँ बसुयाम।। 6 ।।

चतुर पुत्र प्रगटे गृह तुम्हरे, नारायण निज मान।
प्रभु की लीला कवि को वरनै, श्रुति स्मृति कर गान।। 7 ।।

लाख देउ तौ धर्‍यो रहैगो, दरशन ही को काम।
मैं तो तिहारे घर की ढाढ़ी, अग्रअली मेरो नाम।। 8 ।।

पद – 30

रघुपति बालकेलि अति भावत।
पग घुँघरू रुनकार श्रवण सुनि चकित घुटुरुवनि धावत।
मणिमय अजिर निरखि निज आभा पकरै हू नहि पावत।
लोटत लोचन मूँदि रुदन करि मानत नाहिं मनावत।।
श्याम गात कटि लाल करधनी बघनख उर बनि आवत।
कुंचित केश कमल मुख मानौ मधुपावलि लपटावत।।
पण्डित गिरा वदन वामा जब माता मोद मनावत।
बालक चरित विश्वमोहन वपु 'अग्रअली' गुन गावत।।

पद – 31

रघुवर बाल छबि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव कोटि मनोज सोभा हरनि।। 1 ।।

बसी मानहुँ चरन कमलनि अरुनता तजि तरनि।
रुचिर नूपुर किंकिनी मन हरति रुनझुनु करनि।। 2।।

मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरति भूषन भरनि।
जनु सुभग सिंगार सिसु तरु फर्‌यो अदभुत फरनि।। 3।।

भुजनि भुजग सरोज नयननि बदन बिधु जित्यो लरनि।
रहे कुहरनि सलिल नभ उपमा अपर दुरि डरनि।। 4।।

लसत कर प्रतिबिंबु मनि आँगन घुटुरुवनि चरनि।
जनु जलज संपुट सुछबि भरि-भरि धरति उर धरनि।। 5।।

पुन्य फल अनुभवति सुतहिं बिलोकि दशरथ-घरनि।
बसति 'तुलसी' हृदय प्रभु किलकनि ललित लरखरनि।। 6।।

पद - 32

रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर।
देश-देश ते टीकौ आयौ रतन कनकमणि हीर।। 1।।

घर-घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिनि भीर।
आनन्द मगन भये सब डोलत कछु सुधि नाहिं शरीर।। 2।।

मागध बन्दी सूत लुटाए गो गयन्द हय चीर।
देत असीस 'सूर' चिरजीवौ रामचन्द रनधीर।। 3।।

पद - 33

रामजनम रबि उदय जगत महि, तिहूँ लोक को तिमिर नसावत।
लम्पट चोर निसाचर कुल बिन, सबहिन को आनंद बढ़ावत।।

दिनमनि राम संत सरसीरुह, प्रफुलित हृदय बहुत सुख पावत।
जातुधान सँग सदृश कुमुदिनी, तस्कर विपट समूल बिलावत।।
पूरब दिशा कोखि कौशल्या, प्रगट हंस कवि कीरति गावत।
दुष्टन कौ वृष राज मिहर मानौ, 'अग्र' भक्ति प्राबिट बरसावत।।

पद – 34

राम बधाई सुनि मन हरनी घर की ढाढ़िनि आई।
महरानी तुम जाये बालक, मेरे उर की भाई।। 1।।

करि सनमान दान अब दीजै, कीजै आज सवाई।
मेरी ढाढ़ी राय निवाजो, हम तुम पै जु पठाई।। 2।।

हम सों पति सों होड़ परी हैं, ल्याउँगी अधिकाई।
घर सों धार चली प्रण मन सों, तुम सों आइ सुनाई।। 3।।

प्रफुल बदन बोली कौशिल्या, माँगो क्यों न अघाई।
तेरे पति सों सौगुन लीजै, मेरे नाहिं घटाई।। 4।।

उन पाये नृप बागौ पगिया, तुम लहँगा सो सारी।
उन पाये पाटम्बर कम्बर, तुम लो मनि जरितारी।। 5।।

उन पाये हीरा अरु मोती, बाजू बन्दन नीको।
पायल कंकण किंकिनि बेसरि, करन फूल ले टीको।। 6।।

उन पाई रतनन की माला, मोल सुन्यो शत सौ की।
मोल तोल सों सौगुन लीजै, चन्द्रहार अरु चौकी।। 7।।

उन पाये गज घोड़ा पायक, स्यन्दन कंचन चाँदी।
तुम डोला सुखपाल महामणि, लीजै अनगिन बाँदी।। 8।।

उन देख्यौ मुख मेरे लला को, तूँ क्यों न गोद खिलावै।
इतनी कही भई मतवारी, सो सुख को कवि गावै।। 9।।

फूली तन मन अंग न मावति, मन वाँछित फल पाई।
'कृपा निवास' अवध पटरानी, ढाढ़िन अधिक जिताई।। 10।।

पद – 35

लखि सुत नृपति रानि सुख पावैं।
रतन चौक खेलत चारिउ भैया, कहुँ दृग मूँदि हँसत पनि धावैं।।
कहुँ पग पटकि मचलि फिरि मुसकत, करि किलकार मातु ढिग आवै।
तब मुख चूमि गोद जननी लै, कहि लालन पय पान करावैं।।
बाल विनोद महल मधि माँच्यो, अलिगण आय हरषि उर गावैं।
'मधुरअली' ब्रह्मादि देव सब, बैठि विमान सुमन बरसावैं।।

पद – 36

ले आई सजि सुमन डाली, मलिनियाँ मान भरी।
श्रीदशस्यन्दन सुवन विभूषण लघु–लघु ललित लरी।।
सुन्दर सुत सुगंध मोहित मति रहि गई थकित खरी।
'युगलअनन्यशरण' लालन उत्सव घन प्रेम झरी।।

पद – 37

सजनी सहेली रसभरी गावो बधाई प्यार से।
देखो दरस पंग परसि के मोहन मनोरम मार से।।
सु घरी सकल निधि सोहनी समुझो सुमति सुख सार से।
दश दिशि सुमंगल घन मनो बरसत सुधा रस धार से।।

महाराज महरानी मुदित दें दान–मान उदार से।
बड़भाग सुमन 'अनन्यअली' फूली ललित गुलजार से।।

पद – 38

सुन्दर राम पालने झूलैं कौशल्या सुन गावैं।
बलि अवतार देव मुनि बंदत राजिव लोचन भावैं।।
दशरथ पलना चारि गढ़ाये सब संदन के साजू।।
हीरा खचित पाट की डोरी रतन जराये बाजू।।
राते चरण कमल कर राते जलद श्याम तन सोहैं।
घूँघुरवारी अलक बदन पर मधुर हास मन मोहैं।।
घर–घर मंगलचार अयोध्या राघौ जन्म निवास।
गावत सुनत होत कृतारथ बलि 'परमानन्द दास'।।

पद – 39

सुवन कौशिला गोद खेलावत।
मुख छबि निरखत हिय अति हरषत बरषत सुमन प्रमोद बढ़ावत।।
कबहूँ सुकर चिबुक पर परसति लखि रुचि सुचि मुसकावत।
फैल रही पर प्रभा भवन बिच जिय कल कमल खिलावत।।
अवध निवासी भाग्य विभव लखि सुर ब्रह्मादि सिहावत।
इन सम यह कहि–कहि मुद लहि–लहि सुमन वृन्द झरिलावत।।
पुर वासिनी सुवासिनि आवत श्री गुरुदेव मनावत।
होय विवाह लेहिं लोचन सुख युगल विहारिणी गावत।।

पद - 40

हरित बधाई रंग भरी ।।

हरित कुँज घन लता हरित है तरुवर हरित फरी।
हरित भूमि नभ हरित डार पर पंछी हरी-हरी ।।
हरित वसन भूषण हरियाली चामर हरित ढुरी।
हरित सखी मन मुदित बिलोकहिं अतिसय प्यार करी ।।
हरित लाल दशरथ के राजत धनि-धनि आज घरी।
रसिक जनन के सफल मनोरथ हरित हुलास भरी ।।

पद - 41

हुई अब मेहर पीरों दी। फुरी दुवा फकीरों दी ।।
हुआ अवधेश के फरजन्। नकारे की सुनी गरजन् ।।
फटी छाती मुए दुश्मन। हुए खुश दिल हँसे साजन ।।
शहर की औरतें गावैं। चली सब महल को जावैं ।।
रिकावी हाथ में लीये। मजा की मौजगी हीये ।।
जुरी आई तमाम आलम। हुई जहान में मालुम ।।
खजाने जे जवाहिर के। किये नृप आज बाहिर के ।।
दिये नट भाट बाँभन को। गुनी गायक गुलामन को ।।
भिखारी भूप से कीये। घने गज बाजि सजि दीये ।।
गिनो क्या तुरग ताजी को। दिये मंगल मिजाजी को ।।
गगन में नाचती परियाँ। लगाई फूल की झरियाँ ।।

अरगजे सींचियाँ गलियाँ। घरे घर गावती अलियाँ।।
पताका केतु ध्वज सोहैं। कलश विच बीच छवि गोहैं।।
अमित उरगारि उड़ि आये। नगर छवि देखि जनु छाये।।
अवध नर–नारि रस छाके। भूलि सुधि कौन कित काके।।
'रसिकअलि' सुकृति मित काके। कहत अहि शारदा थाके।।

पद – 42

आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए।
नीलजलद तनु स्याम राम सिसु जननि निरखि मुख निकट बोलाए।
बंधुक सुमन अरुन पद पंकज अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए।
नूपुर जनु मुनिवर कलहंसनि रचे नीड़ दै बाँह बसाए।।
कटि मेखल बर हार ग्रीव दर रुचिर बाँह भूषन पहिराए।
उर श्रीवत्स मनोहर हरिनख हेम मध्य मनिगन बहु लाये।।
सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवन कपोल मोहिं अति भाए।
भ्रू सुन्दर करुनारस पूरन लोचन मनहुँ जुगल जल जाये।।
भाल बिसाल ललित लटकन वर बाल दसा के चिकुर सोहाए।
मनु दोउ गुरु सनिकुज आगे करि ससिहि मिलन तम के गन आए।।
उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत ओढ़ाए।
नील जलद पर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनो तड़ित छपाये।।
अंग–अंग पर मार निकर मिलि छवि समूह लै–लै जनु छाए।
'तुलसिदास' रघुनाथ रूप गुन तौ कहौं जो बिधि होहिं बनाए।।

श्री जानकी-जन्म बधाई।

पद - 43

श्री जानकी जन्म-बधाई

आज श्री मिथिला नगरिया में नौबति बाजत री।।
रामा, घर-घर आनन्द बधैया परम सुख छाजत री।
श्री महराज जनक जी के भाग्य उदित भई री।।
रामा, त्रिभुवन की सुख सीवाँ सिया जू प्रगट भई री।
शिव ब्रह्मादिक तरसत जाकी चरण-रज की।।
रामा, धनि-धनि मिथिला नगरिया सुभाग्य नारी नर की।
निरखत भरि-भरि नैन ललीजू को शोभा री।
रामा, सरसत सुख हिय बीच चरण चित लोभा री।।
'सियाअली' कर जोरि निछावरि माँगति री।
रामा, हिय बिच राखौं ललीजू के छवि मोहि भावत री।।

पद - 44

आज जनकपुर मंगल माई, शोभा अति सरसाई।
माधव मास शुक्ल नौमी तिथि प्रगटी कुँवरि सकल सुखदाई।।

देव नटी निरतत सुरपुर में बरसत सुमन देव हरषाई।
जय-जय-जय सुर नर मुनि उचरत उत्तम नारि बँधाई।। 2।।

करि असनान दान नृप दीन्हों गो गज बाजि भूमि समुदाई।
कनक वसन संख्या नहिं आवत याचक जन अभिलाष पुराई।। 3।।

जो जेहि जाँच्यो सो तेहि पायो विदा किये सब भाँति बनाई।
जनकलली को वदन विलोकत 'तुलसिदास' दरबार रहाई ।। 4 ।।

पद – 45

आजु रंगीली बजत बधाई।
रंग महल की पवरि बधाई रंग भरी सहनाई ।। 1 ।।

रँग की मूरति कुँवरि प्रगट भइ रँग सो मिथिला छाई।
'कृपानिवास' रँगीली सखियाँ रँग भरि मंगल गाई ।। 2 ।।

पद – 46

आजु उमग्यौ आनन्द जनकपुर, सुता सुनैना जाई।
कुल की कीरति प्रगटी की धौं, कामलता घर आई ।। 1 ।।

किधौं देवता रिधि सिधि सबकी, मंगल सुख उमताई।
की धौं सकल सुकृत की परतम, सिद्धि विरंचि दिखाई ।। 2 ।।

किधौं अमित लोकनि की सुखमा, मूरति एक बनाई।
ब्रह्मानन्द सिन्धु की कमला, श्री मिथिलापति पाई ।। 3 ।।

किधौं ईशता ईशन की, परमेश्वर की प्रभुताई।
घर आई मिथिलापति के लखि, सकल भाँति समताई ।। 4 ।।

देत दान सनमान परस्पर, देखि धनद सकुचाई।
'रसिकअली' मिथिलेश प्रजा सह, सुरमुनि करत बड़ाई ।। 5 ।।

पद – 47

आजु बधाई आनन्द छाई, श्री मिथिलापुर सुख सरसाई।
रानी राय सुकृत निधि मथि अति, चन्द्राननि सीता प्रगटाई ।।

राजकिशोर चकोर राम दृग, रहस विवस अनुपम रस पाई।
श्रीरसराज रसिक सखि भावहिं, कुमुदिनि नित प्रमुदित विकसाई।।
अलि अवली भलि भाँति कांति लहि, मोद प्रमोद विनोद बड़ाई।
बरस-बरस पर सरस परस्पर, गावत गीत सु प्रीति बड़ाई।।
जड़ चेतन की गाँठि खुलन हित, बरस गाँठि उत्सव अधिकाई।
'युगल बिहारिनि' धनि श्रीसत्गुरु, जिन करुना स्वामिनि सिय पाई।।

पद - 48

आजु तौ बधाई बाजै तिरहुति राय कै।।
उमा रमा जाकी चेरी, आगम निगम टेरी,
सुता सो सुनयना केरी, जनमी है आय कै।
ब्यौम में विमान छाये, देव देखिबे को आये,
फूल बरसाये निज दुन्दुभी बजाय कै।।
धनि-धनि राजा रानी, सकल सुकृत खानी,
बदन विमल बानी, सुयश सुनाय कै।
दुनी में न देखे दुखी, अग-जग जीव सुखी,
हुलसत 'सुधामुखी' गुन गन गाय कै।।

पद - 49

जनक भवन की शोभा रानी फूले अंगन माई री।
गृह-गृह ते सब सखी सयानी मंगल कलश बनाई री।।
चित्र-विचित्र सुदेश परसपर शोभा बरनि न जाई री।
सजि-सजि चलीं भीर भई वीथिन गजगामिनि अति राजै री।।
अतिहिं छबीली सहज रंगीली पग नूपुर धुनि बाजै री।
सखिन सहित सब सुर पुर नारी शिवा सहित ब्रह्मानी री।।

लतनि सहित सोभित भूदेवी बैठी हैं राजदुआरी री।।
सुरबनिता अरु नर की नारी 'अग्रअली' बलिहारी री।।

पद – 50

जनक नृप रानि सयानी, सिय जनमी जग जानी।
श्रीनिमिवंश चन्द चाँदनि सी, सुधा सुयश बरसानी।।
नाम सुनैना सुभग सोहागिनि, बड़ भागिनि दरशानी।
जाई सुता सलोनी सुन्दरि, रूप गुननि की खानी।।
जाके चरण रेनु को तरसत, उमा रमा ब्रह्मानी।।
सोइ मिथिलापुर गलिन अलिन सँग, खेलि रही मनमानी।।
निज नव बाल कलोल लोल चित, सुखमा सरि सरसानी।
बढ़ी अवध नृप राज सुवन हित, ज्यों शशि कला सोहानी।।
शिशु विनोद सिय जन्म सोहिलो, गावत हृदय जुड़ानी।
'ज्ञानाअलि' मति सालि फूलि फरि, पाय सुयश वर पानी।।

पद – 51

जनकपुर बाजत रंग बधाई।
मंगल गान वितान तान छवि, निरखि विमान लजाई।।
सुता शिरध्वज कुशध्वज पाई, मन्दिर ध्वज फहराई।
'कृपानिवास' विलास भरे जन, मन की आस पुराई।।

पद – 52

जनक दुलारी पालने झूलैं।
निरखि बदन सुख सदन लली को अली मातु मन फूलैं।।

विधि प्रपंच रचना यह नाहीं इनकी को उपमा सम तूलैं।
जिनके गुण गावत 'नारायण' राम अधिक अनुकूलैं।।

पद – 53

जनमी जानकी जग जानी।
विमुख विपिन जनु पावक भासी, रसिक सालि हित पानी।।
मातु पिता कीरति सुख सागरि, फल कवि कोविद बानी।
'कृपानिवास अली' की जीवनि, राम रसिक पटरानी।।

पद – 54

जुग–जुग जीवें साहेबजादियाँ।।
विधि हरि हर प्रसाद मंगल मुद हर हमेश आबादियाँ।
विमल विनोद विलास राज गृह बिन दुख दरद विषादियाँ।।
मनमोहिनी सुता सुठि सोहनि रूप रमन अहलादियाँ।
'युगलअनन्यअली' जीवन धर पुर पद प्रिय नर मादियाँ।।

पद – 55

जुग–जुग जीवै तेरी बेटी सुनैना रानी।
बड़भागिनि तेरे घर प्रगटी सकल गुणन खानी।।
अचल सोहाग भाग यश भाजन भाविक जन जानी।
जेहि सेवत तजि लोक लाज गृह करम बचन बानी।।
श्री मिथिलापुर नारि निहोरत वचन सुधा सानी।
'ज्ञानाअली' सिय जनम सोहिलो त्रिभुवन सुखदानी।।

पद – 56

ढाढ़ी आयो द्वार रायजू को, ढाढ़ी आयो द्वारि।
बदत बंश बिरदावलि अविचल, गावत वेद पुकारि।। 1।।

नाचत गावत यश अति निर्मल, लावत उक्ति विचारि।
वंश विदित कीन्हों तिहुँ लोका, जनकराज सिरदारि।। 2।।

आगम कथा कहत राजा सो, ढाढ़ी गुननि अपार।
कुँवरि भई सुख सागरि नागरि, वेद स्मृति को सारि।। 3।।

या बालकि गुन सुनो सुनाऊँ, अचरज बात बिचारि।
उद्भव स्थिति पालन जाको, भृकुटी विषै निहार।। 4।।

ब्रह्मा शेष महेश आदि बसु, सुर मुनि प्रेम प्रचारि।
सब मिलि सेवत चरन सरोरुह, पावत ना सो पारि।। 5।।

रसिक जननि को रस पावत सुख, अवर अवनि भव टारि।
संत उधारनि पालनि सरनी, लीन मनुज अवतारि।। 6।।

पूरन चन्द्रकला सुख नभ में, दुःख को तिमिर निवारि।
रसिक चकोर नैन फल चाखैं, जाके भाग उदारि।। 7।।

भगति कुमुदिनी घट–घट बिगसैं, निशचर कमल तुसारि।
कोक अधर्म धर्म सब तरसैं, काम कोह छल छारि।। 8।।

सुकृत रावरो सुफल भयो अब, जनमी राजकुमारि।
दाँव हमारी दान तुम्हारो, आजु लेहु फल सारि।। 9।।

बैन मूढ़ मति सुनि ढाढ़ी के, हरषि सहित परिवारि।
जो भावे सो लीने मन भरि धेनु वसन महि भारि।।10।।

'कृपानिवास' दास दासिन को, याचक जनक तुम्हारी।
कुँवरि छबीली को मुख देखूँ, नाशै सकल विकारी।। 1।।

पद – 57

नित नई–नई आनन्द बधाई।
बड़े भाग नृप भवन भले दिन, सुता भई सुखदाई।। 1।।
निमिकुल सुधा–समुद्र रमा सी, प्रगट भई सुषमा गुणरासी।
असुरन मारि सुरन की जीवन, विश्व विशद यश छाई।। 2।।
जीवन जरी जगत की स्वामिनि, अंग–अंग छविद्युति बहु दामिनि।
उमा रमा रति देखि लली छवि, तन–मन–धन बलि जाई।। 3।।
सुन्दरि सब गुण खानि सलोनी, ऐसी कहूँ भई नहिं होनी।
नवषट् चारि अठारह चौदह 'ज्ञानाअलि' यश गाई।। 4।।

पद – 58

नौमी तिथि दिन मंगल मंजुल माधवमास सुहायो।
मध्य सुवासर लगन महूरत योग नखत सुभ आयो।। 1।।
अतुलित आनन्द जनकसुता को जन्म सुअवसर पायो।
सुफल मनोरथ जानि सखीजन उमगि सुमंगल गायो।। 2।।
चन्दनि बन्दनि लीपि सुआँगनि गजमनि चौक पुरायो।
रचित साथिये नवल नागरी तोरन धुज पुर छायो।। 3।।
बन्दनमाल वितान तने नव सोंधे नगर सिंचायो।
हरषित पुरवासी नर–नारी आनन्द उर न समायो।। 4।

रानी राय भये मतवारे विप्र कुटुम्ब बुलायो ।
निगम लोक कुल रीति कर्म करि द्विजमुख वेद पढ़ायो ।। 5 ।।

मागध सूत गायक बन्दीजन बंश प्रशंस सुनायो ।
देन लगे नृप दान मगन मन देखि धनद मुरझायो ।। 6 ।।

द्वय शत कोटि बाजि गज कोटिक स्यन्दन कोटि सवायो ।
अर्बनि खर्बनि धेनु सुमहिषी गिनत गनप सकुचायो ।। 7 ।।

भावत भूषण वसन अमोलक सकल विश्व पहिरायो ।
हीरा रतन कनक मनि मुकुता सकल भंडार लुटायो ।। 8 ।।

याचकगन गुन गाय बिरदावलि यथा योग्य सुख पायो ।
दशरथ दान सराहत अब लों जनक करनि अधिकायो ।। 9 ।।

पुर के नर-नारी गुरु भूसुर कुल को नेग चुकायो ।
करत कुतूहल घुरत निशानन सुर प्रसून झरि लायो ।। 10 ।।

राय वदन फूल्यो जनु पंकज सुख सविता प्रगटायो ।
जाति सचिव सेवक जनु मधुकर निकर सुगंध लुभायो ।। 11 ।।

को कहि सकै मोद मन जननी पूरन भाग सुहायो ।
जनु उडुगनपति अवलि विलोकत सिन्धु लहर उमगायो ।। 12 ।।

शिव विरंचि सनकादिक नारद वांछित समय सदायो ।
'कृपानिवास' विलास जन्म सिय गाय-गाय मन भायो ।। 13 ।।

पद - 59

परी यह नौबत की झनकारि, बाजत काके द्वारि ।
चौंकि-चौंकि चाहत चायन सों, भायनि भरि-भरि नारि ।।

नाइन आइ जनाय सुनैना, जाई सिय सुकुमारि।
'कृपानिवास' चली सब आतुर, बिसरी तन सिंगारि।।

पद – 60

पालने झूलति जनक दुलारी।
कंचन नगन जटिल अति सुन्दर जगमग जोति अपारी।।
मुक्ता झालरि कलित किंकिणी झूमक फबि छबि भारी।
मातु सुकृत फल मुख निरखति अति 'नारायण' बलिहारी।।

पद – 61

फूल माल लै मालिन आई।
रूप भरी रसमाती गावत मंगल मोद बधाई।।
मैं मालिन हों रावरे घर की बन्दनवार बँधाऊँ री माई।
रानी सुनैना कुँवरि मनोहरि नर–नारिन निज नैन जुड़ाई।।
फूल चमेली लिये अलबेली जनकलली के उर पहिराई।
दान–मान बहु विधि सौं पाई 'सरजूसखी' की मन हरषाई।।

पद – 62

बजत बधाई आजु जनकपुर, गृह–गृह मंगल मोदमई।
आदि शक्ति अभेद रघुवर वपु, अलख अगोचर प्रगट भई।।
त्रिगुण रूप त्रैशक्ति हेतु सोइ, करुणा मय जन शोक हई।
अमित लोक कारिणि विस्तारनि, पालनि नासति तेज तई।।
गो द्विज धरणि देव भक्तन हित, दिन प्रति कीरति कलित नई।
जगत जननि पितु जनक तनय सोइ धरणि सुता छवि अतुल छई।

अमित भानुभा प्रभा प्रभाकरि, अमित इन्दु सम सौम्य चई।
यह छवि श्री रघुनाथ सहित उर, सब सुख 'जन' वर माँगि लई।।
छिन-छिन नव अनुराग निरन्तर, देखहुँ दृगन सुभक्ति सई।

पद – 63

बरष गाँठ सियजू की आई, सदन सुनयना बजत बधाई।
मृगनयनी कलकोकिल बयनी, हिलि मिलि गावत हिय उमगाई।।
माधव मास नौमि मंगल प्रद, मोद विनोद मघा झर लाई।
'युगलविहारिनि' पियतमाल लसि, प्रेमलता अभिमत फलपाई।।

पद – 64

बधाई माई आज री।
कान परी धुनि चौंकि परी सुनि, मानो घन लो गाज री।।
नाचि उठे मन बरहा लोवन, मगन भई गई लाज री।
'कृपानिवास' सिया जननी को, अविचल रहो सुख राज री।।

पद – 65

बधाई नृप सदन बजन लागी री।।
भई है सिय प्यारी सो सुनि मृदु भारी,
मंगल कर थारी सजन लागी री।।
चली हैं वर भामिनि निरखि छवि स्वामिनि,
छमकि अभिरामिनि छजन लागी री।।
रसिक दृग कुंजै श्याम अली गुंजै,
कृपा गुरु पुंजै जनन लागी री।।

'युगलसुविहारिनि' सु तन मन वारिनि,
नाम सुखकारिनि भजन लागी री ।।

पद – 66

भले दिन जन्म लियो सुखदानी।
निरखि वदन सुख सदन कुँवरि को, मगन भये राय रानी ।।
सकल सिद्धि सम्पदा पदारथ, मुक्ति द्वार अरुझानी।
जनकपुरी में कोइ न सम्हारत, मुक्ति द्वार अरुझानी।
सकल सराहत भाग्य जनक के, जीवन सुफल प्रमानी।
'कृपानिवासअली' की स्वामिनि, शोभा नैन समानी ।।

पद – 67

माधव मुकुता शुभ दिन नौमी जनम लियो है जनकलली।
जनकराय के द्वारे गावैं नारि सबै आनन्द रली ।।1 ।।
माधवमास शुक्ल पक्ष नौमी योग नखत शुभ वार।
भूतल ते मानो भानु उदय भयो जगमग ज्योति अपार ।। 2 ।।
दिव्य सिंहासन रूप अनूपम धरे सकल शृंगार।
चामर छत्र व्यजन पट भूषन सखी करत विधिचार ।। 3 ।।
धूप दीप नैवेद्य निराजन पूजि नृपति करवाई।
वानी विमल प्रशंसति पुलकित पुनि-पुनि लेत बलाई ।। 4 ।।
जब भयो कन्या कुँवरि सोम रति मानुष तन अनुभाई।
भयो सफल जग जानि मुदित मन बोधत मुनिवर राई ।। 5 ।।

मुनि देख चरननि के चिन्हनि कहत निगम अवतारी।
अठसिधि नवनिधि चारि पदारथ जनकराज के द्वारी।। 6।।

घुरै निशान नगर नभ जै धुनि हरषै बरषै फूल।
बद विप्र गुरु सुनि-सुनि सुकृत विधि भै सब अनुकूल।। 7।।

करे कुतूहल मंगल गावैं वृद्ध युवा नर नारी।
तोरन कलश वितान पताका मोतियन बन्दनवारी।। 8।।

मिले ब्रह्मऋषि राज सभा सुर सादर शेष-महेश।
बुझि गई ताप सकल जीवन के सुफल भयो सब देश।।9।।

पुर परिजनगन याचकजन जे भई नृप मन्दिर भीर।
चन्दन चारु अगरजा छिरकें बरसैं कुमकुम नीर।। 10।।

गुनि गंधर्व अपछरा नाचत करैं नटी-नट गान।
उघटैं गति नव वेद सप्त स्वर रागिनि तान बँधान।। 11।।

धेनु रतन मनि वसन बाजि गज कहैं नृपति दोउ देहु।
दान मान सनमान सबै मानो बरसन लागे मेहु।। 12।।

बड़ी भई सुख सम्पति नृप के सुखी भयो संसार।
भुवन चतुर्दश के दुख दारिद गये एकहीं बार।। 13।।

तिरहुत देश जनकपुर शुभ गृह आदि शक्ति अवतार।
'सूरकिशोर' करन जग मंगल हरन सकल भव-भार।। 14।।

पद - 68

मातु सुनयना भाग्य बड़ाई, कोउ न पार कहि पाई।
राम सकल जिय जान कहत श्रुति, राम जान सिय जाई।। 1।।

कोटिन चन्द्रप्रभा निवछावरि, कोटिन रतिन लजाई।
किलकनि हँसनि लसनि जननी को, गोद विनोद बढ़ाई।। 2।।
श्री विदेह को सुकृत कल्पतरु सीता फल प्रगटाई।
जो रस रसिक रसीले रघुबर, रहस विवश सरसाई।। 3।।
निर्हेतुकी कृपाकर प्रिय सम, दूजो कहुँ न लखाई।
'युगलविहारिनि' सियस्वामिनि जस उमगि-उमगि सखि गाई।। 4।।

पद - 69

मालिनि आई रावरे घर की।
कुँवरि सुनैना जाई सुनिकै, नाचत गावत हरषी-हरषी।
कर डलरी हुलरी सी डोलति, फुलरी-फुलरी प्रेम सुवर की।। 1।।
बाँधति बन्दन माल मनोहर, माँगति नेग सुवेगि झगर की।
मानहुँ बेचि शचीपति चापन, दान चुकावति माननि भर की।। 2।।
सुमन विभूषण विविध बनाये, महरानी पहिराय अगर की।
आजु सु दाँव बन्यो मैं धाई, लेउँ बधाई राजकुँवरि की।। 3।।
माँगु सखी मन चाह जो तेरे, मेरे खुले हैं भण्डार कवर की।
'कृपानिवास' कहैं सब पायो, नित गहनो पहिराय हलर की।। 4।।

पद - 70

रावल रंग बधाई छै।
मंगलमणि महरानि सुनैना सुन्दरि कन्या जाई छै।।
सखियन हिय सरसाई छै मंगल गावत आई छै।
'सियासखी' शोभा त्रिभुवन की जनक नगर पर छाई छै।।

पद - 71

लली चिरजीवनी तेरी

सुखमय बढ़ो शुक्ल पक्ष शशि ज्यों प्रगट भई येरी ।।
मिथिला मंगल भयो माई री सब विधि सब केरी ।
रघुबर प्राण पियारी होइहैं सुनु अशीश मेरी ।।
हौंहू मचलि रहों एहि आँगनि मुख निरखौं ए री ।
'जयरामहित' कौ यह दीजै लली चरण चेरी ।।

पद - 72

लखेरिनि खूब खिलौना ल्याई ।
मेरी भेंट लेउ मिथिलेशी मोद भरी हौं आई ।।
चिरजीवौ या बेटी सलौनी भाग बड़े घर आई ।
दैहों मैं नित नयो खिलौना जौ लौं खेल सुहाई ।।
दई निछावरि राखि खिलौना भूषण पट पहिराई ।
'रसिकअली' घर चली मुदित मन लै बहुबार बलाई ।।

पद - 73

सहेलिनि गावो बधाई आज ।।
प्रगट भई सर्वेश्वरि सीता, शक्तिन के सिरताज ।
देव बन्दिता मुनिगन गीता, भक्ति दायिका राज ।।
सब सुख वरषनि निमिकुल भूषनि रूप अनुपम भ्राज ।
'चित्रनिधी' की स्वामिनि सियजू बधू रघुकुल महराज ।।

पद – 74

सिय छबि प्यारी लागै, अतिहिं सलोनी।
कर पल्लव पद गहि मुख मेलति, पालन सुख सरसोनी।।
शुक सारिका मोर मुनियाँ गण, बोलत सुनि किलकोनी।
उचकि–उचकि रहिजात न पावति, तब थकि मृदु स्वर रोनी।।
मातु उछंग गोय फणि मणि ज्यों, बालकेलि दरशोनी।
कबहुँ निरखि शशि वरण अजिर वर, चरण घुटुरुवन गोनी।।
कबहुँ मातु पय प्याय लाय उर, गाय–गाय गुण लोनी।
मुख शशि किरणि सुधा छवि पूरति, पियत दृगन भरि दोनी।।
शुक्ल पक्ष शशिकला बढ़त ज्यों, त्यों नित नव छबि होनी।
'ज्ञानाअलि' यह शिशु विनोद उर, बसत कहै मति कोनी।।

पद – 75

सुनैना रानी गोद खेलावैं प्यारी जानकी।
मुख चूमति अरु बदन विलोकति, पय प्यावत दे मान की।।
प्राणप्रिया होइहैं सबही की, पटरानी कुल भानु की।
'हरिसहचरी' की प्राण जीवन धन, मूरति मोद निधान की।।

पद – 76

सुनयना माई सिय सब गुनन भरी।
उमा रमा ब्रह्माणि अंशजा, निगम परत्व करी।।
श्री मनु मननशील अति तप करि, सेयो परम हरी।
सोइ दशरथ नृप अवध ललन भये, सोइ प्रभु इनहिं बरी।।

इन्हके नाम अनन्त सन्त कहैं सीता राम अरी।
अति मृदुतर चित नित हित हुलसत, प्रीतम स्ववश करी।।
सत्य–सत्य यह सत्य कहत हौं, जेहि प्रिया दृष्टि परी।
सोइ भव तरिहि सु 'युगलविहारिनि' मिलि गुरु सुफल फरी।।

पद – 77

सुनैना माई धनि–धनि तेरे सुनैन ।।
जाके वेद भेद नहिं पावत, सोइ सिय प्रगटी एन।
रती–रती भरि लक्ष्मी लव भरि, यह समता कोइ है न।।
रूपराशि तोरी प्रिया लाड़िली, गुन विधि वरनि सकैन।
'युगलबिहारिनि' हिय उमगत लखि, विहँसनि छवि सुनि बैन।।

पद – 78

सुनैना माई लाड़िली युग–युग जीजै।
गोद प्रमोद विनोद विनोदित अति हित पय पीजै।।
मूरति प्रीति प्रतीति सु पूरित भव भय दुःख छीजै।
'युगलविहारिनि' गावैं सोहिलो सुता सपद रति दीजै।।

पद – 79

सुनो री बधाई नभ नगर सोहाई भई,
सुभग सलोनी बेटी रानीजू ने जाई है।
सुभग सोहाग जाकी सुखमा अपार छाई,
नेति–नेति निगम अगम करि गाई है।।

सोई मिथलेशजू के भवन प्रगट भई,

किये है सफल जाकी जैसी रुचि पाई है।

कबहूँ उछंग मातु पलना झुलावैं गावैं,

'ज्ञानाअलि' देवन बधूटी सुखदाई है।।

पद - 80

हरषीं मिथिलापुर नारियाँ

बरष बधावन नवल सिया सुनि, महामोद उर धारियाँ।

मंगलपुर चहुँ पास रासि सुख, वीथी, नगर बजारियाँ।।

अति अनुराग जाग सबके हिय, रमा उमा मतवारियाँ।

'युगलअनन्य' बधाई सिय की, गावत प्रीति प्रचारियाँ।।

पद - 81

हो मेरी रूप सलोनी जानकी।।

प्रगट भई कुलदीप मनोहर, प्यारी जीवन प्रान की।

बाल मृगी सी बड़ि-बड़ि अँखियाँ, गति गयन्द गुमान की।।

देव दनुज मुनि नाग रमा कहुँ, बेटी न आन समान की।

'सूरकिसोर' बिचारत मुनिजन, होइहिं बधू कुलभान की।।

श्री हनुमज्जन्म बधाई

पद – 82

आज बजत कहँ आनन्द बधाई श्रवण नवल धुनि आई।
जानि परत अंजनी सुवन भे दसहूँ दिसि मुद छाई।।
ताहि समय नाउनि पावनि मति नेवता नीति सुभाई।
तुरत उठी अति हरष हिये मधि मंगल साज सजाई।।
मंगल थार कनक कर विरचित मनिमय दीप सोहाई।
गजगामिनि कामिनि दामिनि हर निरखि बाल बलि जाई।।
कार्तिक मास सनी चौदस तिथि लगन घरी सुखदाई।
'युगलविहारिनि' सिय सियपिय प्रिय उमँगि–उमँगि यश गाई।।

पद – 83

आजु जन्म श्री हनुमत जी को श्री कपिवर कवि टीको।
अंजनि गर्भ प्रभंजन नन्दन भ्रम भँजन जननी को।।
पिंगल नैन मैन मद मरदन ऐन सुमोद मही को।
वैन चैनप्रद किलकि सु बोलत खोलत बन्धन जी को।।
मंगल दिन ऋतु शरद सु–मंगल–मंगल कातिक लीको।
मंगल तिथि ग्रह लगन सु स्वाती अशुभ हरन सबही को।।
भक्त शिरोमनि श्री सियबर के दुःख दवन अवनी को।
जासु कृपा लवलेस पाय जन लागत जग सुख फीको।।

वरदानी वर वरद प्रेम पर रास निवास थली को।
युगल विहार अपार प्यार प्रद युगल विहारिनि पी को।।

पद – 84

आवो–आवो री बधाई गावो आज री।
प्रगट भये श्री अञ्जनिनन्दन सुर नर मुनि हित काज री।।

महाशम्भु अवतार परात्पर धार्‌यो वपु कपि ब्याज री।
ब्रह्मादिक आयो मारुत घर जय–जय करत अवाज री।।

रमा आदि गावति कल कीरति सजि सु मनोहर साज री।
बाल विनोद प्रमोद विलोकत गोद लै रतिपति लाज ली।।

प्रबल प्रताप ताप जन नासक डरत दिवाकर आज री।
'रामवल्लभाशरण' करन मुद प्रियवर सिय रघुराज री।।

पद – 85

आजु तौ बधाई माई अञ्जनी सुवनजू की,
गावत बजावत उमा रमादि नागरी।
कलित कलापै सु अलापैं थापैं दै दै अलि,
भली कली खिली हिय सुछवि उजागरी।।
अनुपम बालक निहारि वारि–वारि निज,
अङ्ग–अङ्ग उमँग सु भरि अनुराग री।
'युगलविहारिनि' विहार सुखसार प्रद,
प्रगटे उदार गुरु रसिक अदाग री।।

पद – 86

आजु मुदित नरदेव मुनी सब सुभग पुत्र अंजनि जायो ।।
कार्तिक कृष्ण भूत कुज स्वाती मेष लग्न शुभ भायो ।
ब्रह्मादिक सुर पन्नग लोकप सब उर सुख सरसायो ।।
वरषत सुमन विबुधगण संकुल अस्तुति करि जै जै धुनि छायो ।
मुदित केशरी जन्म हनुमत के 'रसिकअली' यश गायो ।।

पद – 87

अंजनि नन्दन तुम पर वारी रूप शिरोमणि गुन रस भारी ।
रसिक जनन को रस बरसायो, जनम लियो सुन्दर सुखकारी ।।
कपिकुल मुनिकुल सुरकुल आनन्द गावत मंगल नर अरु नारी ।
'कृपानिवास' हनुमत छवि ऊपर कोटि मदन शोभा बलिहारी ।।

पद – 88

अंजनिनन्दन असुर निकंदन जन रंजन हितकारी ।
मातु गर्भ अंभोदि चन्द जिमि संत चकोर सुखारी ।।
केशरि कश्यप सुकृति प्रभव जनु भक्त कमल सुत मारी ।
निश दिन उदय रहत संतन हित खल तम कुम्भ बिदारी ।।
ब्रह्मचर्य व्रत उर्द्धरेत गति कपि केहरि बल भारी ।
जन्म प्रात रवि अरुण वरण लखि फल भक्षणहि विचारी ।।
जाके चिबुक चोट चूरन भयो कुलिसहुँ रद मद हारी ।
विकल विलोक प्रकोपि प्रभंजन आपन वेग निवारी ।।

लोकपाल जम काल पुरन्दर सब अस्तुति अनुसारी।
निज–निज अस्त्रन अभय कियो तब अजर अमर वपु धारी।
'लालमणी' हनुमान कृपा की नित उठि पंथ निहारी।।

पद –98

अञ्जनी लालन गोद खेलावैं।
निरखि–निरखि माधुरी वदन सिसु हरषित दूध पिलावैं।।
हलरावैं लावैं हिय पुनि–पुनि कलित–ललित गुन गावैं।
मुदित होय पालने झुलावैं आनन्द उर न समावैं।।
मन भावती निवछावरि लै–लैं सबै असीस सुनावैं।।
करिहैं सुजन मनोरथ पूरन खलगन मद सु नसावैं।।
बढ़हु वेगि प्रिय पवन सुवन हम नेग लेब मन भावैं।
प्रेम भक्ति आसक्त रहै मन 'युगलविहार' लखावैं।।

पद 90

चलो नाचो री आली अञ्जनी अँगना।।
श्री सियाराम प्रेम की मूरति प्रगटे श्री हनुमत ललना।
अब दुख दूरि भये सबही को रस आनन्द झरत झरना।।
सुर नर मुनि सब मगन भये हैं बरसत सुमन बजत गहना।
'सियाअली' कपिपति निवछावरि माँगो प्रेम भक्ति गहना।।

पद – 91

नौबत नगर नये–नये कौतुक, नागरि मंगलचार उचारति।
नेह नयो नर नारिन के उर, नव सुख भरि घर सर बस वारति।।

नव–नव चौक पुराय गाय शुभ, नवल वितान कलश रस धारति।
'कृपानिवास' अली हनुमत पर हर्षित आरति मुदित उतारति ।।

पद – 92

श्रीहनुमत अवतार अखिल पति, जग तारक सुर सन्त सहायक।
प्रगट भये गोलोक धाम ते, गुह्य महारस रसिकन दायक।।
गौतम दुहिता प्रण प्रतिपालक, बालक भाव चराचर नायक।
भुव अवतार जिते भुज आश्रित, भूरि भार हर भजबे लायक।।
त्रिगुण ईशवर ईश गुणाकर, गुणातीत, परतीत, बढ़ायक।
ज्ञान योग व्रत परा भक्ति प्रद काल कर्म माया मद मायक।।
अष्टादश षट् चार भारती, सुयश उचारत विपुल विनायक।
श्रीरघुपति चतुरांश पायुसी, निगम संस खलबंशनि घायक।।
पर तें पर परतत्त्व जनकपुर, जनकसुता वर बसति सुबायक।
उज्ज्वल रस सु विलास लसत मृदु, हास दयाकर बास बसायक।।
मुक्ति जिती जे भुक्ति नाक भुव, ऋद्धि–सिद्धि सुख सर्व सुपायक।
आचारज आरज गुरु गौरव विद्या मूल अविद्या हायक।।
चन्द्र सूर ग्रह अनिल अनल जल आयसुवर्ती बसुधा धायक।
अमल अदोष अजन्म अगोचर राम हितारथ जन्मो जायक।।
षड् भगवान भाग्य भर भय हर भाव विनोदी भक्तन भायक।
'कृपानिवास' उपासक गायक करुणाकर कवि कोविद गायक।।

पद – 93

हनुमत झूलैं पालनवाँ।

केशरि कपि के कनक शिखर पर रतनन जटिल झुलनवाँ।।

अञ्जनि हरषि झुलावति गावति प्रेम पयोधि मगनवाँ।

'लालमणी' वह समय सुरति करि सुधि बुधि रही न अपनवाँ।।

पद – 94

हिय उमगि–उमगि हरषाय बधाई गावो री।

श्री अंजनि गृह जन्म लियो है श्री कविवर कपिराय।।

मंगल दिन ग्रह लगन सुस्वाती मंगल गृह–गृह छाय।

मंगल कातिक मास रास रस मंगल चौदसि भाय।।

मंगल मूरति आप प्रगट भई श्री सियबर हित आय।

मिट्यो अंगल मूल सूल जन लंक संक अकुलाय।।

सुर सुरतिय हिय हरषि सुमन चय गगन–मगन झरिलाय।

'युगलविहारिनि' अवध महल सिय बाजत आनन्द बधाय।।

स्वामी श्री मैथिलीरमण शरण जी महाराज
लक्ष्मणकिला, अयोध्या

श्री लक्ष्मणकिलाधीशजी द्वारा लिखित एवम् प्रकाशित पुस्तकों की सूची

श्री बसन्त विहार पदावली	20/-
श्री मैथिली विवाह पदावली	30/-
श्री झूलन विहार पदावली	20/-
श्री सीतातत्व मीमांसा	15/-
श्री हनुमदुपदेश	20/-
अजामिलोपाख्यान	20/-
भ्रमरगीत	15/-
गोपीगीत	25/-
श्री वैष्णव दर्शन	15/-
श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल	15/-
गीता तात्पर्य	15/-
श्रीनाम कान्ति	30/-
श्रीधाम कान्ति	15/-
श्रीमद्वाल्मीकि रामायण : एक मीमांसा	100/-
रघुवर गुण दर्पण	15/-
वाल्मीकि रामायण : तात्पर्य निर्णय	20/-

* पुस्तक प्राप्ति स्थान *

श्री सीताराम सन्देश कार्यालय

श्रीलक्ष्मणकिला, श्रीअयोध्याजी

जिला-फैजाबाद (उ.प्र.)

* प्रकाशक *

स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान

श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्णबलराम हॉल, आशियाना मेन रोड, पटना, बिहार

मो. : 09431651405

Printed At Deepak Press Gwalior : 09425113555

Scanned by CamScanner